ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 91 अंक : 04
मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत् 2073
कलि संवत् 5117
21 नव. से 05 दिस., 2016
दयानन्दाब्द : 192
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,117
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

मुद्रा नियन्त्रण शासन का प्रमुख कर्तव्य।

क्या इसी राष्ट्रधर्म का निर्वहन किया है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ?

सम्पादकीय

जिस वस्तु अथवा तत्त्व से जीवन गतिमान होता है वही अर्थ है। **'अर्थ'** के बिना लोकयात्रा सम्भव नहीं है। जीवन यात्रा में हमारा सम्पर्क जिन–जिन पदार्थों से हाता है वे सभी **'अर्थ'** हैं। धन शब्द भी अर्थ का ही पर्याय है– **यतः सर्वप्रयोजन सिद्धि स अर्थ**। अर्थ की ओर सबकी स्वाभाविक प्रवृत्ति दिखाई देती है– **अर्थार्थ प्रवर्तते लोकः**। संक्षेप में कहा जा सकता है कि जिसे प्राप्त करने की अभिलाषा सब करते हैं, वहीं 'अर्थ' हैं – **अर्थ्यते सर्वैः इति अर्थः। अर्थ्यते इति अर्थः**।

अर्थव्यवस्था पर विस्तार पूर्वक विचार करते हुए मानव व्यवहार सम्बन्धी अनेक विषयों को कौटिलीय अर्थशास्त्र में स्थान दिया गया है। चाणक्य ने राजनीति, दण्डनीति, राजकुमारों की शिक्षा, मन्त्रिमण्डल, गुप्तचर, राजदूत, शासन प्रबन्ध, आतंक की रोकथाम, वस्तुओं में मिलावट, मूल्य नियन्त्रण, नापतौल, कूटनीति, युद्ध, गुप्त विद्याएँ आदि बहुत से विषयों पर सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में उक्त समस्त विषयों में शुद्धता की आवश्यकता है, परन्तु यह परिशोधन क्या शासन द्वारा सम्भव है यह भी विचारणीय है? शासन विभिन्न परिस्थितियों पर नियन्त्रण के लिए विधि का निर्माण करता है पुनः विधि की अनुपालना करवाने हेतु उपविधियों का निर्माण होता है यह अनन्त प्रक्रिया है। ऐसे में विभिन्न चिन्तकों ने आदर्शराज्य की परिकल्पना की है क्योंकि आमजन में राष्ट्रीय मूल्यों के विकास के अभाव में शासन विधि की अनुपालना करवाने में असहाय प्रतीत होता है। **–शेष पेज न. 5...**

अन्दर पढिए – आर्य मार्तण्ड के मुख्य सम्पादक एवं सभा मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा के नेतृत्व में प्रकाशित 50 अंक के उपलक्ष्य में विषेश– पृ. 02 ।
– महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य से वेदमंत्र – पृ. 03
– रोग एवं उनकी यौगिक चिकित्सा में 'बवासीर' रोग का उपचार – पृ. 03
– आर्य वीर दल की प्रान्तीय बैठक के समाचार – पृ. 07
– आर्य वीर दल के प्रान्तीय शिविर से जुड़ी हुई सूचनाएँ– पृ. 08 ।

आर्य मार्तण्ड का यह अंक आर्य समाज, मोतीकटला, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान एवं सम्पादक मण्डल आर्य समाज का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

अन्दर पढ़िए – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, नेपाल से समाचार – पृ. 02 । – महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य से वेदमंत्र – पृ. 03 – रोग एवं उनकी यौगिक चिकित्सा में 'अण्डकोष वृद्धि' रोग का उपचार – पृ. 03 । – आर्य समाज, अजमेर का इतिहास एवं परिचय – पृ. 04,5 । – आर्य जगत् से जुड़े समाचार ।

डॉ. सुधीर शर्मा के नेतृत्व में आर्य मार्तण्ड का 50 वां अंक का आप सभी के सहयोग से सफलतापूर्वक प्रकाशन

प्रिय पाठकगणों !

हमें गौरव का अनुभव हो रहा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के 91 वर्ष प्राचीन मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' के मेरे मुख्य सम्पादकत्व एवं कार्यकाल में निरन्तर प्रकाशित होते हुए आज 50वां अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है। नवम्बर, 2014 से हमने यह कार्यभार ग्रहण किया और निरन्तर नवीनता प्रदान करने का पूर्ण प्रयास किया । प्रस्तुत है इस अवसर पर आर्य मार्तण्ड की इस 50 अंकों की छोटी सी यात्रा का विवरण ।

- पत्र का कलेवर आकर्षक बनाया गया।
- पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक राजस्थान प्रांत के सभी सातों सम्भागों एवं जिलों तक पहुँच।
- इन 50 अंकों की यात्रा में आर्य मार्तण्ड की पाठक संख्या में 10 गुना तक वृद्धि हुई है। आज इसके 10000 से अधिक पाठक हैं।
- 1000 से अधिक प्रतियाँ वर्तमान प्रकाशित की जा रही हैं। जो कि लगभग 200 प्रतिशत की वृद्धि है।
- राजस्थान सहित 10 राज्यों में वितरण अर्थात् 500 प्रतिशत की वृद्धि ।
- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सहित अनेक राज्यों की प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य प्रमुख संगठनों के साथ श्रेष्ठ समन्वय स्थापित करने में सफलता ।
- सम्पूर्ण राजस्थान एवं आर्य जगत् में होने वाली महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का निरन्तर प्रकाशन ।
- आज राजस्थान में आर्य समाज, आर्य वीर दल में होने वाली प्रत्येक गतिविधि की सूचना के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम आर्य मार्तण्ड बन गया है।
- समसामयिक विषयों पर उपयोगी एवं स्तरीय विषय–वस्तु एवं लेखों का निरन्तर प्रकाशन।
- निष्पक्ष एवं निर्भीकता से राष्ट्रीय मुद्धो को उठाना एवं समाज में निरन्तर नवचेतना का संचार करना।

आर्य मार्तण्ड के माध्यम से प्रसारित सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यकम, जनजागृति अभियान एवं नवीनताएँ

- ➢ प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आरम्भ किये गये स्वच्छता अभियान में सहयोग, सम्पादकीय, अपील ।
- ➢ ऐतिहासिक सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति अभियान की 11 राज्यों से एक साथ राष्ट्रस्तरीय समाचार कवरेज और विशेष प्रचार ।
- ➢ ''नशामुक्ति एवं शाकाहार अभियान'' का प्रचार–प्रसार। फलस्वरूप 14000 लोगों ने हस्ताक्षर कर पूर्ण शराबबन्दी को समर्थन दिया । देश के अन्य राज्यों में भी आर्य संगठनों, प्रतिनिधि सभाओं ने प्रेरणा ली। सैंकड़ों युवाओं, महिलाओं ने नशा एवं मांसाहार का त्याग किया।
- ➢ महापुरुषों की संक्षिप्त जीवनियों से परिचय ।
- ➢ राजस्थान के प्रत्येक आर्य समाज के इतिहास, गतिविधियों आदि की जानकारी कराने के लिए ''सौजन्य'' योजना का विगत 9 मास से निरन्तर संचालन ।
- ➢ योग एवं स्वास्थ्य से जुड़ी हुई जानकारियों, परामर्श, सूचनाओं का निरन्तर प्रकाशन ।
- ➢ युवाओं की रचनाओं को महत्त्व देकर उनकी रचना कला को मंच प्रदान करना ।
- ➢ प्रत्येक अंक में कुछ न कुछ नवीन जानकारी, प्रेरणा या अभियान आदि के विषय में आर्य जगत् को प्रेरित करने का निरन्तर प्रयास ।

इस प्रकार अनेक प्रकार से आर्य मार्तण्ड नवीनता प्रस्तुत कर समाज में नवचेतना एवं समन्वय स्थापित करने का कार्य निरन्तर करता आ रहा है। आर्य मार्तण्ड की इस यात्रा की सफलता के लिए किसी को श्रेय देने से पूर्व हम पूर्व सम्पादक श्री अमरमुनि आर्य, अलवर का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने विकट एवं विपरीत स्थितियों में भी इस पत्र का अस्तित्व धूमिल नहीं होने दिया । इस यात्रा की सफलता का श्रेय हमें यदि किसी को देना चाहिए तो वो है **''आर्य वीर दल''** । बिना आर्य वीर दल के सक्रिय सहयोग के आर्य मार्तण्ड को व्यापक स्तर तक पहुंचाना अत्यन्त दुष्कर कार्य था । इसके लिए आर्य वीर दल का आर्य मार्तण्ड एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान आभार व्यक्त करती है। साथ ही इसमें सहयोगी रहे आर्य जन, आर्य समाजें, विद्वान् सभी का बहुत–बहुत आभार।

– डॉ. सुधीर शर्मा
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
मुख्य संपादक, आर्य मार्तण्ड

आर्य मार्तण्ड अब पीडीएफ फोरमेट में भी उपलब्ध

ईमेल एवं वाट्सएप से भी प्राप्त किया जा सकता है 'आर्य मार्तण्ड' ।

हमें सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि नवम्बर के द्वितीय अंक से आर्य मार्तण्ड का प्रत्येक अंक अब पीडीएफ फोरमेट में भी उपलब्ध होगा । ''**आर्य मार्तण्ड** '' के अंक ईमेल के माध्यम से प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल आईडी एवं नाम, पता, सम्पर्क आदि aryamartand@gmail.com एवं whatsapp No. पर भेजें ।

– सम्पादक

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमौः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – चाणक्य नीति अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

वेदामृत

ऋषि : – आप्त्यस्त्रिताः। देवता : – अग्नि ।
छन्द : – निचृत् त्रिष्टुप् ।
स्वर : – धैवतः ।
विषय : – इस सूक्त में अग्नि शब्द से अग्रणायक परमात्मा कहा जाता है।
भाष्यकार – युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
प्रकाशक – वैदिक पुस्तकालय, अजमेर ,
मुद्रक – वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

ओ३म् स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः । यथायज ऋतुभिर्देव देवानेवा यजस्व तन्वं सुजात ।। – ऋ॰ 10। 07। 06।।

भाषान्वयार्थ–(**देव**) हे परम इष्टदेव परमात्मन् ! (**दिवि देवान् स्वयं यजस्व**) द्युलोक में वर्तमान सूर्यादि को तू स्वयं संगत कर–संगत करता है–सम्प्रेरित करता है (**अप्रचेताः–पाकः–ते किं कृणवत्**) अप्रकृष्ट ज्ञानवाला–अल्पज्ञ तुझ से ज्ञान पाकर पक्का बनने वाला जीवात्मा तेरी क्या सहायता कर सकता है ? कुछ भी नहीं कर सकता, यद्यपि जीवात्मा तेरे जैसा नित्य, चेतन और सृष्टि के देवों –सूर्य आदि से पूर्व वर्तमान होता है (देव) हे उपास्यदेव परमात्मन् ! (**यथा–ऋतुभिः–देवान्–अयजः**) तू जैसे उस उसके कालों से सूर्यादि देवों को स्वस्व दिव्यगुणों से संसृष्ट करता है (एव) इसी प्रकार (सुजात तन्वम् यजस्व) हे सुप्रसिद्ध परमात्मन् ! अपने अंगरूप मुझ आत्मा को गुणों से संसृष्ट कर।।6।।

भावार्थ– परमात्मा ने आकाश के सूर्य आदि पदार्थों को उन–उन गुणों से युक्त उन–उन के समयानुसार रचा यद्यपि जीवात्मा उनके रचने से पूर्व वर्तमान रहता है परन्तु वह अल्पज्ञ–अल्प शक्ति होने से उनके रचने में उसका सहायक नहीं बन सकता अपितु परमात्मा अपनी कृपा से ज्ञान दर्शन देकर जीवात्मा को गुणवान् और कर्म करने में समर्थ बनाता है।।6 ।।

रोग एवं उनकी यौगिक चिकित्सा भाग – 6

अर्श (Piles)

लक्षण– इसके दो भेद हैं –**वातार्श** (बादी की बवासीर) इसमें गुदा प्रदेश में मस्से होते हैं। शौच जाते समय पीड़ा होती है। **रक्तार्श** (खूनी बवासीर) में शौच के साथ रक्त आता है। कब्ज प्रायः रहता है। रक्त के अभाव में शरीर का वर्ण पीला एवं सफेद हो जाता है।

कारण– कब्ज मुख्य कारण है। अधिक बैठना, उष्ण पदार्थों का सेवन इत्यादि से गुदाप्रदेश की सिराएँ फूलकर मस्से का रूप धारण कर लेती हैं।

आसन चिकित्सा– उत्तानपादासन, हलासन, शीर्षासन, धनुरासन, सर्वाङ्गासन, मत्स्यासन, पादांगुष्ठासन, तोलांगुलासन,।

सावधानी– योगमुद्रा तथा पश्चिमोत्तानासन का निषेध ।

क्रिया– हल्का उड्डीयानबन्ध, नौलिक्रिया, अश्विनीमुद्रा ।

अश्विनीमुद्रा– पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा) एक ग्राम पाँच किलो जल में मिलाकर कुँडी या चिलमची में भर लें। इस कूँडी को स्नान करने वाले टब में रख दें। अब नग्न होकर (नितम्ब का निचला भाग पानी में डूब जाये) टब में बैठें तथा अश्विनीमुद्रा (गुदा को ऊपर की ओर आकुन्चित करना तथा छोड़ देना) का अभ्यास बढ़ाकर 100 तक करें। इस क्रिया से 8 से 10 दिन में ही लाभ प्रतीत होने लगेगा, परन्तु 40 दिन तक प्रयोग करें। यदि टब की सुविधा न मिल सके तो वैसे ही पानी में बैठकर या बिना पानी के ही अश्विनी मुद्रा करने से भी लाभ होता है।

प्राणायाम– नाड़ी शुद्धि, शीतली, चन्द्रभेदी ।

गणेश क्रिया– अंगुली में रबड़ का दस्ताना पहनकर अरण्डी के तेल (कास्ट्रायल) में डुबोकर गुदा द्वार की भीतर तक शुद्धि करनी चाहिए । इससे कब्ज का भी निवारण होता है।

प्राकृतिक चिकित्सा– कटिस्नान एवं एनिमा लेना चाहिए।

औषध– रक्तार्श –

1. ग्वारपाठे का पत्ता तोड़े । उससे जो पीला रस अपने आप निकले उसे चीनी या काँच की कटोरी में एकत्र कर लें । यह रस तथा ग्वारपाठे को छीलकर उससे एक–डेढ़ तोला रस और निकाल लें। इस रस में हाथ की कुटी हुई हल्दी एक से डेढ़ मात्रा, मिश्री 1–2 तोला मिलाकर प्रातःकाल सेवन करें। इससे 10 दिन में ही लाभ होकर रक्त आना बन्द हो जाएगा, परन्तु 40 दिन तक प्रयोग करना चाहिए।
2. नागकेशर का चूर्ण समान भाग मिश्री मिलाकर 5 ग्राम मक्खन के साथ प्रातःकाल चाटें।

– क्रमशः.....

स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान संचालक,
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

अशान्ति का स्थान मानव मन है – डॉ. स्नेहलता शर्मा

जयपुर स्थित राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. स्नेहलता ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, नेपाल में रखे विचार

नेपाल! 22 अक्टू. ! नेपाल में आयोजित हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के तीसरे दिन हुए वेद सम्मेलन में जयपुर स्थित राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. स्नेहलता शर्मा ने **''विश्व शान्ति में वेद की भूमिका''** विषय पर व्याख्यान दिया । प्रस्तुत हैं उनके व्याख्यान के प्रमुख अंश – वर्तमान में विश्वशान्ति को भंग करने वाले प्रमुख कारण साम्राज्यवाद, साम्यवाद, सम्प्रदायवाद, अर्थलोलुपता, वर्णभेद, प्रान्तीयता, भौतिक संसाधनों को प्राप्त करने की लालसा इत्यादि हैं। इन परिस्थितियों में विश्व में शान्ति की स्थापना हेतु वेद ही सर्वकालिक एवं सार्वजनीय मार्ग प्रशस्त करता है। विश्व के अनेक प्रचलित मत इसाई, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, पारसी, यहूदी आदि बनने का आग्रह करते हुए मनुष्य को मनुष्य से पृथक् कर रहे हैं, किन्तु इस सन्दर्भ में ऋग्वेद का कथन है – ''मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'' अर्थात् मनुष्य बनें ! वेद का यह उपदेश संकीर्णता और संकुचितता को त्यागने की ओर प्रवृत्त करता है। आज विश्व के समस्त धर्मों के आधार मानव धर्म को सही रूप में समझने की आवश्यकता है । वर्तमान में संसार के देशों में व्याप्त श्रेष्ठता की प्रतिस्पर्द्धा अशान्ति के मूल में है। यहां वेद उपदेश देता है कि ''हे संसार के लोगों ! तुममें न कोई बड़ा है, न कोई छोटा है, तुम सब भाई–भाई हो । सौभाग्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ो – अजेष्ठासे अकनिष्ठासो एते संभ्रातरो वावृधः सौभागाय । – ऋ. 5.60.5 ।

वेद हार्दिक एकता का सन्देश देता है –

सह्रदयं सांमनस्ययविद्वेशं कृणोमि वः । – अथर्व. 3.30.1
अन्यो अन्यमाभिहर्यत वत्सं जातमिवाहन्य ।।

ईश्वर कहता है मैं तुम्हारे लिए एक ह्रदयता, एकमनता और निर्वैरता करता हुँ। तुम एक–दूसरे को प्रीति से चाहो जिस प्रकार सद्यः प्रसूता गौ अपने बछड़े को चाहती है। विश्व शान्ति की स्थापना में वेदमार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है –

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।।

135 वर्ष पुराने आर्य समाज अजमेर की वर्तमान कार्यकारिणी

ध्वजारोहणकरतेप्रधानप्रो. रासासिंह, स्वामीप्रणवानन्दसरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री, मंत्री चन्दरामआर्य, पं.सत्यपालसरल, पं. योगेशदत्त

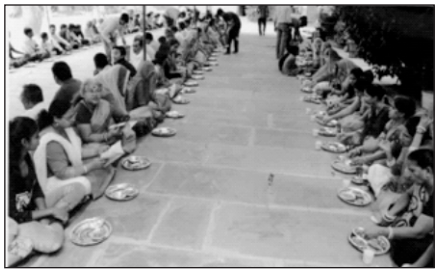

ऋषिलंगरप्रीतिभोज के अवसरपरआर्यजन भोजनकरतेहुए

यजुर्वेदपारायण यज्ञ के ब्रह्माडॉ. सोमदेव शास्त्री एवं वेदपाठी डॉ. मोक्षराज, डॉ. राधेश्याम शास्त्री, कु. मीना शास्त्री, कु. श्वेताआर्य

अजमेर ! आर्य समाज के 135वें वर्ष में प्रवेश करने की इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर वर्तमान में कार्यरत कार्यकारिणी की जानकारी प्रकाशित की जा रही है। प्रो. रासासिंह पूर्व सांसद, नवीन मिश्र, चन्दराम आर्य, चिरंजीलाल शर्मा, डॉ. आराधना आर्या, किशनलाल शर्मा, श्रद्धानन्द शास्त्री, डॉ. राधेश्याम शास्त्री क्रमशः प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, उपमंत्री, उपमंत्री महिला प्रकोष्ठ, कोषाध्यक्ष, अंकेक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष आदि दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। अन्तरंग सभासदों में कृपालसिंह तोमर, मोहिनी तोमर, डॉ. मोक्षराज, डॉ. भागचन्द गर्ग आदि सम्मिलित हैं।

दिव्य वैदिक सत्संग द्वारा मनाया गया ऋषि बलिदान दिवस

जयपुर! 30 अक्टू. ! दिव्य वैदिक सत्संग द्वारा नगर के मानसरोवर के सेक्टर 56 स्थित पार्क में महर्षि दयानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया । प्रातः 7.30 बजे से यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया । सत्संग संचालक सुनील अरोड़ा ने बताया कि वैदिक विद्वान् डॉ. कृष्णपाल जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा महर्षि के जीवन से जुड़े हुए महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रकाशित किया। अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। महिलाओं द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

इससे पूर्व 28 अक्टू. को सायं 4 से 6 बजे तक जालन्धर से आये सरदार गुलशन की भजन संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया । उक्त पार्क में हुए इस समारोह की अध्यक्षता लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी ने की। इन आयोजनों में स्थानीय निवासियों, पार्क समिति ने भी पूर्ण सहयोग दिया।

महर्षि दयानन्द मेरे आदर्श–कृष्णा पूनिया, अन्तर्राष्ट्रीय एथलीट

आर्य समाज पिलानी का यजुर्वेद पारायण यज्ञ महायज्ञ सम्पन्न

पिलानी (झूंझुनूं) ! कस्बे में स्थित आर्य समाज द्वारा 9 से 12 अक्टू. तक आचार्य उषर्बुध, जयपुर के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया । महायज्ञ प्रातः 8 से 11 एवं दोपहर 3 से 6 बजे की पारियों में किया गया । इस अवसर पर उपस्थित हुई अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एथलीट कृष्णा पूनिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द मेरे आदर्श हैं। आर्य समाज यदि नहीं होता तो मैं आज इस ऊँचाई पर नहीं होती। नगर पालिका के चैयरमेन विजय हलवाई सहित अनेक गणमान्य जनों एवं आस–पास के ग्रामवासियों, आर्य जनोंने कार्यक्रम में भाग लिया । वेद–पाठ स्मृति शास्त्री, श्रुति शास्त्री, रमा शास्त्री, मीनाक्षी शास्त्री ने किया । भजनोपदेश सन्दीप आर्य मेरठ द्वारा किया गया।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

मुद्रा नियन्त्रण शासन का प्रमुख कर्तव्य। पृष्ठ 1 का शेष .....

पर

इसी के ज्वलन्त उदाहरण के रूप में वर्तमान नोटबन्दी की सरकारी घोषणा के उपरान्त उत्पन्न परिस्थितियों को देखा जा सकता है। नोटबन्दी विधि विरूद्ध अनैतिक साधनों से मुद्रा अर्जित करने वाले धनपतियों पर तीव्र प्रहार है। इस प्रकार के निर्णय लेने हेतु शास्त्र भी शासन को निर्दिष्ट करता है–

अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया।
रक्षितं वर्धयेद् वृद्धया वृद्धं पात्रेषु निः क्षिपेत्।।

राज्य दण्ड से अप्राप्त की प्राप्ति की इच्छा, नित्य देखने से प्राप्त की रक्षा, रक्षित की वृद्धि, एवं बढे हुए धन को सुपात्रों एवं योग्य कर्मों में व्यय करे। इस प्रकार की शुद्धि समय–समय पर आवश्यक है। समाज में व्याप्त गन्दगियों में सर्वप्रथम अर्थशुचि की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द ने आज से लगभग 140 वर्ष पूर्व इस सम्बन्ध में स्पष्ट संकेत करते हुए अपने ग्रन्थ संस्कार विधि में शास्त्रीय उद्धरण पुरस्सर निर्देश दिया है कि आजीविका या जीवन निर्वाह के लिए धर्मपूर्वक ही धन अर्जित किया जाए–

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः।।

जो धर्म ही से पदार्थों का संचय करता है, वही समस्त पवित्रताओं में उत्तम है क्योंकि जल–मृत्तिकादि से जो पवित्रता होती है वह धर्म के सदृश उत्तम नहीं है।

वेद भी यही उपदेश करता है। हमारे पास पवित्र धन हो– **भद्रा रातिः** (ऋ. 8.19.19), हमारी समृद्धि सत्य या सच्चाई वाले साधनों पर निर्भर हो– **विभूतिरस्तु सूनृता** (ऋग. 7.32.21) पवित्र लक्ष्मी को ही घर में स्थान दें, अपवित्र को नहीं– **रमन्तां पुण्या लक्ष्मीः** (अ.7.115.4), आकाशबेल जिस प्रकार वृक्ष को सुखा देती है, उसी प्रकार अपवित्र लक्ष्मी (कालाधन) मनुष्य का सर्वनाश कर देता है– **या मा लक्ष्मी .... वन्दनेव वृक्षम्.** (अथर्व.7. 115.2) महात्मा गाँधी के जिन विचारों से प्रेरित होकर प्रधानमन्त्री ने स्वच्छ–भारत अभियान संचालित किया है ऐसे राष्ट्रनायक के आर्थिक विचार भी इस सम्बन्ध में स्पष्ट हैं। उनके अनुसार धनलिप्सा अनर्थ की जनक है, विशेषकर उन परिस्थितियों में जबकि नैतिकता एवं धर्म का स्थान गौण हो जाता है। गाँधी ने पीड़ित और शोषित मानव को अर्थशास्त्रियों द्वारा उपेक्षित किये जाने के कारण कहा है कि पश्चिम के अर्थशास्त्र की आधार शिला ही गलत दृष्टि–बिन्दुओं पर रखी गई है अतः इसे अर्थशास्त्र नहीं अपितु अनर्थशास्त्र ही कहा जाना उपयुक्त होगा। वर्तमान अर्थशास्त्री अनेक तर्क–वितर्कों के आधार पर अर्थशास्त्र को कई अवसरों पर धर्म की सीमाओं से दूर ले जाने का यत्न करते हैं। ऐसी स्थितियाँ प्राचीन भारत में भी व्याप्त भीं। इसी विरोध के समाधान स्वरूप **याज्ञवल्क्य स्मृति** में स्पष्ट निर्देश है कि धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में विरोध होने पर धर्मशास्त्र बलवान होता है– **अर्थशास्त्रात्तु बलवद् धर्मशास्त्रमिति स्थितिः**। वर्तमान में भारतीय जनता को भी अपनी इस समृद्ध परम्परा एवं धार्मिक मूल्यों का स्मरण करते हुए नोटबन्दी के सर्वकारीय निर्णय का सम्मान करना चाहिए। समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति एवं धर्म की सिद्धि के मूल में अर्थ ही है और अर्थ का मूल आधार राज्य को माना गया है– **"सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलं अर्थः, अर्थस्य मूलं राज्यम्"**। अतः हम सभी को अपने मूल आधार की संरक्षा एवं समृद्धि हेतु यत्न करते हुए पवित्र निर्णयों में शासन का सर्वविध सहयोग करना चाहिए।

हमे एकजुट होकर ऐसे धनकुबेरों एवं मुद्राराक्षसों पर तीव्र प्रहार करना चाहिए जिन्होंने इस देश को लूटा है। आमजनता को चाहिए कि इन धनपतियों का किसी भी स्तर पर सहयोग नहीं करना चाहिए इसी में आमजन का हित निहित है। जनता को अपने बैंक खातों को भी इस काली कमाई को जमा करवाकर दूषित होने से बचना चाहिए। यही हमारा राष्ट्रधर्म है।

– डॉ सुधीर शर्मा

आर्य वीर दल की जयपुर इकाई के कार्यकर्ता बैंकों में लाइन में लगे लोगों को पानी पिलवाते हुए, उनकी अन्य सहायता करते हुए।

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथि घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

ऋषि मेला पूर्ण उत्साह एवं नवीन प्रेरणा के साथ सम्पन्न

सम्पूर्ण देश से हजारों आर्य जनों, विद्वानों, संन्यासियों, सभा प्रतिनिधियों ने लिया भाग

1. ऋषि मेला के उद्घाटन समारोह में ध्वजारोहण के समय आर्य जन एवं आर्य वीर ।
2. लकड़ी मल्लखम्भ का प्रदर्शन करते आर्य वीर ।
3. अन्तिम दिन आयोजित हुए ''युवा सम्मेलन'' में उद्बोधन देते प्रधान व्यायाम शिक्षक आचार्य नन्दकिशोर शास्त्री ।
4. शस्त्र–प्रदर्शन को तैयार आर्य वीरांगनाएं ।
5. श्रद्धांजलि सत्र में उपस्थित आर्य जन ।

राणा सांगा की समाधि की दुर्दशा पर सभा मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा ने जताई चिंता

स्थानीय निवासियों से भी की चर्चा

बसवा (अलवर)! 1 नवम्बर! आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा ने आर्य वीर दल के कार्यकारी प्रान्तीय संचालक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री, प्रान्तीय महामंत्री भवदेव शास्त्री सहित आर्य वीर दल के प्रतिनिधिमण्डल एवं कार्यकर्ताओं के साथ राजस्थान के अलवर जिले के बसवा ग्राम में स्थित महान् योद्धा महाराणा सांगा की समाधि का भ्रमण किया । समाधि की दुर्दशा देखकर उन्होंने चिंता व्यक्त की। मंत्री के अनुसार समाधि के नाम से केवल एक चबूतरा बना हुआ । चारों तरफ गन्दगी का ढ़ेर है। कोई सार–सम्भाल नहीं, पटरी के बिल्कुल पास में बना हुआ है। ग्रामवासियों के अलावा कोई उसे जानता नहीं । रास्ता एकदम खराब और छोटी सी, संकरी सी पगडण्डी बनी हुई है। आश्चर्य तो ये है कि इतने महान् योद्धा की समाधि को देखने वाला, प्रेरणा लेने वाला कोई भी नहीं। मंत्री ने स्थानीय ग्रामवासियों से भी इस विषय में चर्चा की। उन्हें इस स्थल के जीर्णोद्धार के लिये प्रेरित भी किया । वहाँ के युवकों को आर्य वीर दल से जुड़ने की प्रेरणा भी दी। ज्ञातव्य है कि खानवा के युद्ध से वापस लौटते हुए बसवा में उन्होंने देह त्याग किया था ।

- जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता; ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। – एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

आर्य वीर दल राजस्थान की प्रान्तीय बैठक सम्पन्न

सम्पूर्ण राजस्थान में सोशल मीडिया प्रभारी किये जायेंगे नियुक्त

अजमेर ! 6 नवम्बर! आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय इकाई की बैठक ऋषि उद्यान, अजमेर में सम्पन्न हुई। 12.30 बजे से आरम्भ हुई बैठक में प्रान्तीय कार्यकारिणी के अतिरिक्त जिला संचालकों, संभाग संचालकों, विद्वानों, वरिष्ठ आर्य जनों, दयानन्द स्मृति भवन न्यास –जोधपुर के मंत्री किशनलाल गहलोत ने भाग लिया । प्रधान सह संचालक सत्यवीर आर्य की अध्यक्षता में आयोजित बैठक के आरम्भ में प्रान्तीय मंत्री भवदेव शास्त्री ने पिछली बैठक की कार्यवाही एवं इसके विचारणीय बिन्दु प्रस्तुत किये । बैठक में सर्वप्रथम आर्य वीर दल के 25 से 31 दिसम्बर तक लग रहे प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों एवं अन्य व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई । प्रान्तीय स्तर पर शिक्षकों, प्रचारकों की संख्या बढ़ाने के साथ–साथ आगामी 5 वर्षों में 100 व्यायाम शिक्षक तैयार करने का लक्ष्य रखा । सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए इसके सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की गई । प्रत्येक जिले में एक सोशल मीडिया प्रभारी नियुक्त करने का निर्णय लिया , साथ ही जयपुर, अजमेर सहित 9 जिलों के जिला प्रभारी भी नियुक्त कर दिये गये। प्रान्तीय सोशल मीडिया प्रभारी के रूप में अनिल आर्य एवं सहप्रभारी के रूप में विशाल आर्य के कार्यकाल को आगे बढ़ाया गया । ईसाई धर्मान्तरण के बढ़ते दुष्प्रचार के विरूद्ध किये जा रहे कार्यों की जानकारी एवं अनुभव प्रान्तीय मंत्री ने रखे । आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा सभी आर्य समाजों को आर्य वीर दल अधिष्ठाता नियुक्ति एवं ''बाल एवं युवा सत्संग'' के आयोजन सम्बन्धी दिये गये निर्देशों को रखा और इस दिशा में प्रयास करने हेतु सभी को निर्देश दिये। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विषयों पर चर्चा की गई। सभी प्रतिनिधियों ने अपनी–अपनी समस्याएँ एवं सुझाव रखे। उक्त जानकारी संगठन के कार्यकारी प्रान्तीय संचालक देवेन्द्र शास्त्री ने दी।

ईसाईयत के दुष्प्रचार का पर्दाफाश

आर्य वीर दल की सक्रियता से पूरे गाँव का धर्मान्तरण टला

अजमेर ! 1 नवम्बर ! पूरे देश में ईसाई मिशनरी अपना जाल तेजी से फैला रही हैं। छद्म हिन्दू वेश में ईसाई मिशनरी गांव–गांव जाकर धर्मांतरण में सक्रिय हैं। इसका ताजा उदाहरण मिला अजमेर से भीलवाड़ा के रास्ते में पड़ने वाले गांव टांटोटी में। इस घटना के साक्षी रहे आर्य वीर दल के प्रान्तीय मंत्री भवदेव शास्त्री ने बताया कि 1 नबम्वर को आर्य वीर दल के प्रधानसहसंचालक सत्यवीर आर्य के सेवानिवृत्ति समारोह में भाग लेकर अन्य आर्य वीरों के साथ अपने गांव टांटोटी पहुंचे। रात्रि के लगभग 10.30 बज रहे थे । मैंने देखा कि गणेश मन्दिर में जागरण चल रहा है। तो मुझे कुछ सन्देह हुआ कि इस समय तो जागरण का कोई वातावरण नहीं है और भजनी इस गांव के भी नहीं हैं। तो मैं बैठ गया कि चलो देखते हैं। उन्होंने आगे बताया कि मुश्किल से 10 मिनट हुए होंगे भजन के बाद जयकारा लगने लगा, राम–कृष्ण की जय के स्थान पर नारा लगा **''प्रभु यीशु की जय''**। शास्त्री ने बताया कि जैसे ही उन्होंने यह सुना तो वे आश्चर्यचकित हुए । उन्होंने तुरन्त भजनियों से पूछा कि ये प्रभु यीशू की जय क्यों बोले ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि ये भी हमारे भगवान् हैं। शास्त्री ने जब प्रमाण के बारे में पूछा तो वे बगलें झांकने लगे। बचने के लिए कह दिया कि ऋग्वेद में लिखा है। परन्तु प्रमाण नहीं दे सके । बहुत देर तक बहस चलने के पश्चात् आखिर उनको अपने बोरिया–बिस्तर समेटकर भागना पड़ा । और फिर भवदेव जी ने गांव वालों को ईसाई मिशनरी के षड़यन्त्रों एवं ईश्वर के सच्चे स्वरूप के विषय में बताया । भवदेव जी के इस प्रयास की पूरे गांव में प्रशंसा भी होने लगी और गांव वालों ने आगे से इस प्रकार के षड़यन्त्रों से सावधान रहने का संकल्प लिया ।

सेवानिवृत्ति नहीं सेवाप्रवृत्ति समारोह – डॉ. सुधीर शर्मा

सत्यवीर आर्य का सेवानिवृत्ति समारोह बना आर्यों का मिलन समारोह

आर्य वीर दल के प्रधानसहसंचालक आचार्य सत्यवीर आर्य का सेवानिवृत्ति समारोह सम्पन्न

अलवर ! 1 नवम्बर ! आर्य वीर दल के प्रधान सह संचालक सत्यवीर आर्य का सेवानिवृत्ति समारोह सम्पन्न हुआ । अलवर के आर्य कन्या शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में यज्ञ के साथ समारोह का आयोजन हुआ। यज्ञ के पश्चात् सत्संग एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया । सत्यवीर जी के सम्मान में अपने विचार रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा ने कहा कि यह आचार्य जी का सेवानिवृत्ति नहीं अपितु वास्तव में सेवाप्रवृत्ति समारोह है । राजकीय सेवा से मुक्त होकर अब उन्हें राष्ट्र की, वेद की सेवा करनी है। इसके बाद आर्य वीर दल के प्रधान संचालक स्वामी डॉ. देवव्रत आचार्य, गुरूकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (सांसद, सीकर), दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री विनय आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा –राजस्थान के पूर्व मंत्री अमरसिंह आर्य, उपप्रधान जगदीश आर्य, आचार्य विजयपाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा–हरयाणा, भवदेव शास्त्री, (मंत्री, आर्य वीर दल– राजस्थान) सहित अनेक विद्वानों, आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने अपने आशीर्वचन एवं शुभकामनाएं प्रदान की। कु. श्वेता आर्य ने कविता प्रस्तुत की। गुरूकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा सत्यवीर जी की जीवनी को संस्कृत के श्लोकों के माध्यम लयबद्ध करके प्रस्तुत किया । आर्य वीर दल के प्रधान व्यायाम शिक्षक नन्दकिशोर आर्य एवं आर्य वीरों ने भजन प्रस्तुत किये। इस अवसर पर आर्य वीर दल एवं आर्य समाजों द्वारा आर्य का सम्मान भी किया गया । कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज अरावली विहार, अलवर के मंत्री धर्मवीर आर्य ने किया ।

वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं, संयम्य च मनस्तथा। सर्वान् संसाधयेदर्शानक्षिण्वन् योगतस्तनुम् ।। – मनु. 2.100 ।।

अर्थात् इन्द्रियों के समूह को वश में करके और मन को नियन्त्रित करके, योगाभ्यास के द्वारा शरीर को क्षीण न करते हुए अपने सब प्रयोजनों को सिद्ध करें।।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

आर्य समाज साँभर लेक (जयपुर) के सौजन्य से
प्रान्तीय योग - व्यायाम प्रशिक्षण व चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक : 25 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक

शिविर उद्घाटन एवं ध्वजारोहण
दिनांक 25 दिसम्बर 2016
दोपहर 2.30 बजे

समापन एवं भव्य व्यायाम प्रदर्शन
दिनांक 1 जनवरी 2017, रविवार

स्थान : राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय
साँभरलेक, जिला-जयपुर (राज.)

आयोजक :
आर्य समाज साँभर समिति (राज.) एवं जयपुर जिले की समस्त आर्य समाजें

सम्पर्क सूत्र :

गिरधर गोपाल कयाल	अतुल गोयल
9414447200	9824119636
डॉ. ज्ञान प्रकाश दायमा	सत्यवीर आर्य
9414516677	9414789461

मान्यवर बन्धुओं एवं प्यारे आर्यवीरों,

सादर नमस्ते।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित संगठन आर्य समाज की युवा इकाई आर्यवीर दल राजस्थान का प्रान्तीय योग-व्यायाम प्रशिक्षण व चरित्र निर्माण शिविर संत दादू दयाल जी की तपो भूमि के पवित्र, शान्त, प्रदूषण मुक्त प्राकृतिक शुद्ध वातावरण से युक्त राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय, सांभरलेक, जिला-जयपुर (राज.) में आयोजित किया जा रहा है।

आजकल बच्चों व युवा वर्ग में बड़ों के प्रति असम्मान की भावना, मादक पदार्थों का सेवन, संस्कार हीनता, कुसंगति आदि बुराइयाँ बढ़ती जा रही है। ऐसे सांस्कृतिक प्रदूषण के समय में सुयोग्य प्रशिक्षकों एवं वैदिक विद्वानों की देखरेख में लगने वाला यह शिविर युवा वर्ग के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप अपने बच्चों व युवकों को प्रेरित कर इस शिविर में अवश्य भेजें। जिससे वे शारीरिक आत्मिक, मानसिक व सामाजिक उन्नति कर सकें।

शिविर में युवक उन्नति कार्यक्रम

आत्मरक्षा के लिए
जूड़ो-कराटे, लाठी, भाला आदि शस्त्र संचालक
संकट कालीन परिस्थिति में बचाव के तरीके

स्वास्थ्य रक्षा के लिए
योग, आसन, प्राणायाम, दण्ड बैठक, सूर्य नमस्कार
मलखम्भ, जिमनास्टिक आदि

आत्मिक उन्नति के लिए
सुयोग्य शिक्षकों तथा विद्वानों द्वारा संध्या, ध्यान,
यज्ञ, संगीत एवं बौद्धिक प्रशिक्षण

यदि माता-पिता (अभिभावक) चाहते हैं कि

उनके बच्चे आज्ञापालक, बड़ों का आदर करने वाले, संस्कारित व अनुशासित बनें। शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से पूर्ण स्वस्थ व मजबूत बनें, अपनी ईश्वर प्रदत्त योग्यताओं का पूर्ण रूपेण विकास करके स्वयं के, परिवार के, समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में सहयोगी बनें तो -

आप सभी अभिभावकों से पुरजोर अनुरोध है कि अधिकाधिक संख्या में बच्चों व युवाओं को इस शिविर में भेजकर परिवार व राष्ट्र निर्माण के पुनीत कार्य में हमारा सहयोग करें।

आर्य वीर दल - एक परिचय

आर्य वीर दल की स्थापना 26 जनवरी 1929 को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में हुए डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के सम्मेलन में महात्मा हंसराजजी की अध्यक्षता में हुई।

आर्यवीर दल देश व देश के बाहर भी सार्वदेशिक स्तर पर अपनी शाखायें व कार्यक्रम चला रहा है और संस्कृति रक्षा, शक्ति संचय और सेवा कार्य में जुट आर्य समाज को युवा, चरित्रवान, कार्यकर्ता मुहैया करा रहा है।

आर्य समाज द्वारा हैदराबाद निजाम में चलाये गये आन्दोलन में 14000 आर्यवीरों ने भाग लिया। पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गौरक्षा आन्दोलन, स्वदेशी, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा व शराब बंदी आदि समस्त आन्दोलनों में आर्य वीर दल अग्रणी भूमिका निभाता आया है। देश विभाजन के दिनों में शरणार्थियों के लिए चलाये जाने वाले शिविरों में रक्षा व व्यवस्था का कार्य आर्य वीरों ने किया।

कच्छ एवं नेपाल में आये भूकम्प, बंगाल का अकाल, नौआखाली का विप्लव सभी स्थानों पर राहत कार्यों में आर्य वीर दल अग्रणी रहा है।

आगामी कार्यक्रम :

- 26 से 29 दिसम्बर., 2016 तक आर्य समाज, सूरसागर, जोधपुर द्वारा वार्षिकोत्सव के अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ ।
- 1 से 7 दिसम्बर, 2016 आर्य समाज कोटपूतली द्वारा वेद कथा एवं यज्ञ का आयोजन।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।